POLITICAL SCIENCE Dept.
B.A. - III (Hons.), Paper - V

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College,
Tajpur, Samastipur

सत्ता और शक्ति में अन्तर

सत्ता और शक्ति का प्रयोग बहुधा पर्याय के रूप में किया जाता है परन्तु दोनों में व्यापक अंतर है। सत्ता वैधानिक आदेशात्मक अधिकार है जो व्यक्तियों के व्यवहार को निर्देशित करता है। शक्ति इसलें के आदेशात्मक व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता है। सत्ता और शक्ति में निम्नलिखित अंतर है —

① स्रोत —

शक्ति के विभिन्न स्रोत होते हैं। जैसे :- पुरस्कार शक्ति, अवपीड़न शक्ति, निर्दिष्टता शक्ति, सूचना शक्ति आदि। एक व्यक्ति की संगठन में शक्ति उसकी सत्ता के प्रयोग में चूक हो सकती, परन्तु स्वयं सत्ता का स्थान नहीं ले सकती।

② साहचर्य —

सत्ता सदैव ही औपचारिक संगठन के साथ सम्बंधित होती है। यह सदैव ही औपचारिक होती है जबकि शक्ति औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों ही होती है।

③ प्रकृति —

सत्ता अवैयक्तिक और वस्तुनिष्ठ होती है, जबकि शक्ति व्यक्तिगत और व्यक्तिपरक होती है।

④ व्यापकता —

शक्ति सर्वत्र व्याप्त होती है। सत्ता तो केवल पदस्थिति में ही निहित होती है। शक्ति संगठन के निम्नतम स्तर पर भी विद्यमान होती है।

⑤ प्रत्यायोजन —

सत्ता को सामान्यतया हस्तान्तरित किया जा सकता है, परन्तु शक्ति कुछ रूपों में हस्तान्तरित नहीं की जा सकती है। जैसे:- शारीरिक बल की शक्ति।

⑥ सन्तुलन —

सत्ता सदैव ही उत्तरदायित्व के साथ सम्बद्ध होती है। सत्ता और दायित्व सदैव ही सहविस्तृत होते हैं और एक-दूसरे को सदैव संतुलित करते हैं।

⑦ सत्तात्मकता —

सत्ता आदेशात्मक होती है, शक्ति आदेशात्मक नहीं होती। व्यक्तियों की इच्छा पर निर्भर करता है कि वे उसे स्वीकार करें या नहीं।

इसप्रकार सत्ता, शक्ति को संगठित करने का कृत्रिम उपाय है जबकि शक्ति संस्थानों पर स्वाभाविक और तात्कालिक प्रभाव उत्पन्न कर सकती है।